

लेशो नाम वटः Bṛāg. P. 5, 16, 25. सदैव ° RV. 3, 8, 11. 7, 33, 9. 9, 3, 10. VS. 8, 43.

वल्क, वल्कते Dṛāṭup. 16, 38 (प्राधान्ये). 40 (परिभाषणादिसादानेषु, क्वादन st. दान v. l.; स्तुतिर्हिसादानवानु Vop.). — caus. वल्कयति 33, 97 (भाषार्थ oder भासाथ).

— उप mit einer Frage auf die Probe stellen, ein Räthsel vorlegen: एतद्वत्सुप वल्कामसि (बलिकामके Līṭj. 9, 10, 11) वा VS. 23, 51. med. Çat. Br. 14, 4, 2, 9. 12, 4, 2, 28. — Vgl. उपवल्क.

— प्र dass.: प्रवल्ककाभिर्वे देवा असुरान्प्रवल्कयिष्यान्त्यापयन् Ait. Br. 6, 33. यच्च किं चित्प्रवल्कितमदित्यकमेव तत् rāthselhaft Nir. 7, 11, 13, 8. — Vgl. प्रवल्क fg.

ववाङ्ग n. die weibliche Scham Trik. 2, 6, 21 fehlerhaft für वराङ्ग.

वव्रं (von 1. वृ) 1) adj. sich versteckend, sich in sich zurückziehend: वव्र ऊर्ध्वनि RV. 1, 82, 3. वव्रासो न पे स्वजाः स्वतवसः 168, 2. त्वं चिदर्थं मधुपं शयानमसिन्वं वव्रं मङ्गादुदयः 5, 32, 8. — 2) m. Höhle, Grube, Tiefe Naigh. 3, 23. अश्वमज्जाः सुदुष्यो वव्रे अतः RV. 4, 1, 13. 5, 31, 3. 10, 8, 7. दुष्कृते वव्रे अतरेनारम्भणे तमसि प्र विध्यतम् 7, 104, 3. वव्रां अन्तौ अत्र सा पदीष्ट 17.

वव्रिं (wie eben) m. Versteck, Hülle, Gewand; körperliche Hülle, Leib Naigh. 3, 7. Nir. 2, 9. वव्रिं वसनाः RV. 1, 164, 7. 29. राज्ञामि कृष्टेहृपमस्य वव्रेः 4, 42, 1. शपे वव्रिश्चरति जिह्वादा 10, 4, 4. इच्छन्वत्रिमिवदत्पूषास्य 8, 5. ह्रिवो वव्रिम् 9, 69, 9. 71, 2. स्व वव्रिं कुरु धितस्यः 1, 46, 9. अग्नि नद्यो वव्रिणा कृताः 84, 10. ज्ञुरूपो वव्रिं प्रामुञ्चतं द्वापिमिव च्यवानात् 116, 10. 5, 74, 5. प्र वव्रेवव्रिश्चित 19, 1. Daher angeblicher Liedverfasser von RV. 5, 19. — Vgl. वि०.

वव्रिवासम् adj. eine Hülle oder Verkleidung umlegend AV. 8, 6, 2.

वव्र, वैष्टि Dṛāṭup. 24, 71 (कात्तौ). वैष्टि Naigh. 2, 6 (कात्तिकर्मन्). वै-  
त्ति, उष्टि, षमसि RV. 2, 31, 6. उष्टि P. 6, 1, 16. वव्रति RV. 8, 28, 4.  
विवष्टि (Schol. zu P. 2, 4, 76. 7, 4, 78). वव्रति; अश्वत्, वैशम्, वैशाम;  
अवृ Vop. 9, 6. उशान्, उशमान; उवाश, उशतुम् P. 6, 1, 17. Vop. 9, 6.  
वावष्टम्, वावशे, वावशान्; वशीम् MBh. उशितवत् P. 6, 1, 16. Schol. 1)  
wollen, gebieten: समर्थो गा व्रजति यस्य वष्टि RV. 1, 33, 3. 2, 22, 1. 24, 8.  
नास्या वष्टि विमुचम् 5, 46, 1. 8, 20, 17. 28, 4. तथेदंदिन्द्र क्रत्वा यथा वशः  
80, 4. 82, 10. 1, 163, 7. यदा दुग्धं वरुणो वष्टादित् 5, 83, 4. त्वं च सोम नो  
वशो जीवातुम् 1, 94, 6. यस्ते वष्टि वव्रति तत् । यद्दीक्यसि वीरु तत्  
wenn man Etwas von dir will, so befehlst du es 8, 43, 6. दशमीमूयः सुम-  
नो वशेक (वसेक?) gebiete, herrsche AV. 3, 4, 7. mit dat. inf.: वष्टि प्रदेवान्य-  
ज्ञेयै RV. 6, 11, 3. यथा त उष्टिमीष्टये 1, 30, 12. 5, 74, 3. ता वा वास्तून्-  
ष्टि गमये 1, 134, 6. med.: दृष्ट्वा न्यौभादुशमान् श्रोतः verfügend  
über, anbietend 4, 19, 4. — 2) verlangen nach, begehren, gern haben,  
lieben: इन्द्रो वामुशति हि RV. 1, 2, 4. यज्ञं वष्टु 3, 10, 22, 6. स्तोमम् 21,  
1. 2, 31, 7. 37, 1. सुष्टुतिम् 6, 61, 7. 7, 16, 11. पीतिम् 98, 2. सव्यम् 3, 31, 14.  
प्रावाणः सोम वो हि कै सखित्वाप वावष्टुः 6, 81, 14. इमे हि ते कारवो  
वावष्टुर्धिया 8, 3, 18. क्वयं तवेदं कृतभुगवष्टि देवः (so die ed. Bomb.; NI-  
LAK. erwähnt die Lesart der ed. Calc. देवान्, wozu er प्रापयितुम् er-  
gänzt) MBh. 1, 2106. मा धर्मान्सकलान्वशीः 3, 11002 (S. 569). निःस्वो  
वष्टि शतम् Spr. 1626. अग्नि हि वीर्यप्रभव भवस्य ज्ञपाय सेनान्यमृशति  
देवाः Kumāras. 3, 15. भवनेषु रसाधिकेषु पूर्व तितिरत्तार्थमुशति ये निवा-

VI. Theil.

सम् Çak. 179. Hariv. 4360. mit infin.: बाणाश मे तूषामुखादिसृत्य मुकुर्मुकुर्ग-  
त्तुमुशति चैव MBh. 5, 1909. — 3) mit Entschiedenheit seine Meinung an  
den Tag legen, statuieren, behaupten, annehmen, erklären für (vgl. velle): स  
वा एष आत्मेकेशति कवयः सितासिति: कर्मफलैरनभिभूत इव प्रति शरी-  
रेषु चरति Maitraj. 2, 7. भस्मनिभे (अर्के) भयमुशति परचक्रात् Varāh.  
Brh. S. 3, 29. पञ्चमं व्ययमुशति शोभनम् 8, 36. 24, 34. 43, 62. Brh. 23, 3.  
27 (25), 10. 23. Bṛāg. P. 1, 5, 10. 40. 10, 8, 12. 12, 8, 46. दलीकृतं चक्रमु-  
शति चापम् so v. a. nennen Golādhj. 11, 15. — 4) partic. उशत्, उशान  
und वावशान willig, gern, freudig, folgsam, verlangend RV. 1, 12, 4. 61,  
6. 101, 10. पतिं न पत्नीरुशतीरुशतं स्पृशति 62, 11. 17, 17. 22, 9. या न  
ऊत्र उशती विप्रयति यस्यमुशतः प्रक्रमं शेपम् 10, 83, 37. 9, 2. 3, 33, 1.  
4, 22, 3. 5, 32, 10. 10, 16, 2. AV. 14, 2, 52. उशन्तु वै वाज्रश्रवसः सर्वदेसं  
देवा Kathop. 1, 1. आ योनिमस्यादुशतमुशानः RV. 3, 8, 7. 4, 23, 1. 6, 39, 2.  
सजोषता अघ्नं वावशानाः 3, 20, 1. 22, 1. 33, 9. स वावशान इह पाकि सो-  
मम् 81, 8. 10, 89, 13. सोमं पति मृत्यो वावशानाः 9, 97, 34. देदेदौ रयिम्-  
श्चिन् वावशानः bereitwillig 93, 4. 1, 113, 10. 7, 5, 5. 36, 6. Im Bṛāg. P. er-  
scheint उशत् (vgl. उशती in den Nachträgen) sehr häufig in der Bed.  
reizend, lieblich (= कामनीय Comm.): वाच उशतीः 2, 7, 11. कथा 3, 13,  
47. कीर्ति 2, 7, 20. 4, 30, 11. उशदुकूल 8, 9, 17. उशतम् 1, 3, 14. 7, 9, 16.  
उशतात्मना 7, 7, 24 wird durch मुहनात्मना erklärt; उशद्भिर्ब्रह्मतेजसा 4,  
4, 34 durch देदीप्यमानैः; उशति 10, 8, 31 als voc. fem., als loc. (= स्वर्चिते)  
und auch als verbum finitum (= जल्पति) erklärt. उशत् als partic. und  
Nom. pr. in folgender Stelle: सुयज्ञतनयो ऽभवत् । उषन्त्यो (उशतो die  
neuere Ausg., उशतो नामतः NILAK.) यज्ञमखिलं स्वधर्ममुपता (उशतो die  
neuere Ausg., = कामयानानाम् NILAK.; wir würden Bed. 3) annehmen)  
वृः Hariv. 1974. im folgenden Çloka liest die neuere Ausg. सूनुरौषतः  
statt पुत्र उषतः der älteren.

— caus. वशयति in seine Gewalt bekommen, sich unterthan machen:  
वशयेत्सकलान्मर्त्यान्विशेषेण मदीपतीन् Verz. d. Oxf. H. 103, b, 24.

— intens. वावश्यते P. 6, 1, 20. Vop. 20, 13.

— अग्नि 1) beherrschen: वर्षेव वधोरग्नि वष्टोऽसौ RV. 2, 23, 3. — 2)  
zustreben auf: स हूतो विश्वेदग्नि वष्टि सक्ता RV. 4, 1, 8. — 3) med. be-  
gehren: जुषाणो हस्त्यमग्नि वावशे वः RV. 2, 14, 9. — 1, 164, 28 hierher  
oder zu वाप्.

— समा, समावशेत् Kām. Nitis. 4, 57 (auch im Comm.) fehlerhaft für  
समावसेत्.

1. वैश (von वष्) 1) m. a) Willen, Wunsch, Belieben P. 3, 3, 58,  
Vārti. 3. AK. 3, 3, 8. 3, 4, 16, 91. Trik. 3, 3, 432. H. 430. an. 2, 553.  
Med. c. 12 (n. nach Med. und Çabdar. im ÇKDr.). देवानां चित्तिरो  
वशम् RV. 10, 171, 4. तत्रियस्य वशे सति wenn der Ksh. will Çat. Br.  
1, 3, 2, 15. यावदस्य वशः (= शक्तिः Comm.) स्यात् so lange er mag 5, 14,  
4, 4, 5, 19. 6, 2, 1, 39. स्व वशं चेरुः 3, 9, 4, 14. 13, 5, 4, 22. वश एतत्कुर्यात्  
Kāṭy. Ça. 10, 8, 29. वशां अनु RV. 1, 82, 3. 181, 5. पिबो सोमं वशां अनु  
8, 4, 10. 10, 91, 7. तेन (यथा) पाकि वशां अनु 142, 7. अनु वशं (mit Abfall  
des Nasals und Verkürzung des Vocals) ऋणमाददिः 2, 24, 13. अथो वशानो  
भवथा सक्त श्रिया 3, 60, 4. Ait. Br. 3, 13. Ait. Up. 3, 2. आत्मनो वशः Spr.  
1349. — b) Befehl, Herrschaft, Gewalt, Botmäßigkeit; = प्रभुत्व und  
आपत्तता (आपत्तत्व) Trik. H. an. Med. (n. nach Med. und Çabdar.). वशा